'समरसता सेतु'

वर्ष-१ अंक-१

संपादक : देवजीभाई जे. रावत

संरक्षक : मा. श्री अशोक सिंहल अं.रा.अध्यक्ष वि.हि.प.
मा. श्री डॉ. प्रविणभाई तोगडीया अं.रा.महामंत्री वि.हि.प.
मा.श्री मधुभाई कुलकर्णी अ.भा.कार्य कारणी सदस्य RSS
मा. श्री ईन्द्रेशकुमार अ.भा. कार्य कारणी सदस्य RSS
मा. श्री के.वी. मदनन अ.भा. उपाध्यक्ष वि.हि.प.
मा. श्री रामनाथ कोविंद प्रवकता भा.ज.पा. ऍड. सुप्रिमकोर्ट
मा. श्री डॉ. रामनरेश कथेरीया सांसद - आग्रा
मा. श्री डॉ. विजय सोनकर शास्त्री - अध्यक्ष सा.स.अभियान
मा. श्री राजेन्द्र शर्मा - प्रांत अध्यक्ष, विहिप, मध्य भारत,'स्वदेश'
मा. श्री अमरीशभाई पटेल C.A.
मा. श्री प्रो. राजेशभाई शास्त्री
मा. श्री डॉ. पी. जी. ज्योतिकर
मा. श्री मोहन जोशी - केन्द्रीय मंत्री - विहिप
मा. श्री सिध्धार्थ मणकीवाला -
प.पू. महंतश्री शंभुनाथ महाराज-सवगुण मंदिर झांझरका, गुज.
प.पू. पुरुषोत्तमचरणदासजी महाराज श्री स्वा.गुरुकुल,झुंडाल,गुज.

प्रांत सह परामर्शदाता :
दिल्ली - श्री आर. सी. वर्मा - ऍड. दिल्ली हाईकोर्ट
हरियाणा - श्री अमित व्यास
राजस्थान - श्री प्रहलाद अटवाल - जयपुर
श्री गोपाल कोटिया - उदयपुर
गुजरात - श्री डॉ. नरेन्द्र परमार - गांधीनगर
श्री अशोकभाई रावल RSS - अहमदाबाद
श्री भास्कर मकवाणा - सुरेन्द्रनगर
श्री तुलसीभाई काकडीया - सुरत
महाराष्ट्र - श्री किशोर डवले - नागपुर
श्री पी. जे. वनजारी - नागपुर
गोवा - श्रीमती डॉ. अनिता बहन
केरल - श्री के. टी. मुरलीधरन
उत्तर प्रदेश - श्री शिवदाससिंग - काशी
श्री डॉ. ओमप्रकाश श्रीवास्तव - गोरखपुर
श्री लल्लनसिंग - काशी
बिहार - श्री अनंत झा - मुझफरपुर
श्री कामेश्वर चौपाल - पटना
ओरिस्सा - श्री दिपककुमार महंतो - कटक
झारखंड - श्री सुरेश मल्लीक - रांची
आंन्ध्रप्रदेश - श्री कन्ना भाष्कर - विजयवाडा

हिन्दी परमर्शदाता : कृष्णपालसिंह भदौरिया

व्यवस्था : श्री जयश्रीबहन त्रिवेदी

संपर्क - पत्र व्यवहार
धर्मादा हॉस्पिटल, गांधी आश्रम के पास,
अहमदाबाद - ३८० ०२७. गुजरात.
संपर्क : ०७९-२७५५९९८९ मो. ०९९२५२०३५३१
E-mail : samrastasetu2010@gmail.com

सम्पादकीय....

आत्मीय बंधु,
प्रणाम,

दीपावली की शुभकामनाएँ

'समरसता सेतु' मासिक का प्रथम अंक दीपावली के शुभ दिनों में आपके समक्ष प्रस्तुत करने के आनंद के साथ विशेष अनूभुति हो रही है । हिन्दू समाज का अभिन्न अंग ऐसा है अनुसूचित जाति समाज के आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक अनेक सवालों को बिना संघर्ष, परस्पर आदान प्रदान द्वारा भातृत्व भाव के साथ कौटुंबिक परिवार भावना से हम सब साथ में बैठकर, सवालों का हल निकाले, ऐसी शुभ भावना हृदय में लेकर अनुसूचित समाज को सामाजिक सन्मान, न्याय मिले ऐसे उमदा हेतु को सामान्य व्यवहार में लाने हेतु दीपावली के शुभ अवसर पर इस मासिक का प्रारंभ हो रहा है ।

अंग्रेजों को अपने देश से बाहर निकाल राष्ट्र के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेनेवाले सभी लोगों को 'स्वंत्रतता सेनानी' के नाते समाज-सरकार में सम्मान प्राप्त होता हो तो राष्ट्रधर्म - हिन्दू समाज की रक्षा हेतु अनेक अपमान, अत्याचार अवरोध तथा पीड़ा सहन करके भी बहुमत हिन्दू समाज के साथ रहकर निज धर्म संभालने वाले ऐसे "धर्मयोद्धा", अनुसूचित समाजको समाज मे क्यो गौरवपूर्वक सन्मानित न किया जाय ।

प्रवास में अनुभव होता है कि आज भी 'अस्पृश्यता', हिंदू समाज का कलंक विविध स्वरूपों में समाज में दिखाई पडता है । स्वतंत्रता के ६४ वर्षो के बाद भी हिन्दू समाज यह बुराई दूर नहीं कर सका जो अत्यंत दु:ख के साथ वेदना पहुँचानेवाली बात है । हमारी इस कमजोरी का लाभ देश में विधर्मी - विदेशी अनेक प्रकार के षडयंत्र रचकर दिन प्रतिदिन राष्ट्र की एकता और अखंडितता की शक्ति को नष्ट करने के कुचक्र गति से चला रहे हैं जो अत्यंत निंदनीय है।

समय समय पर हमारे राष्ट्र में अनेक संतों-महापुरुषों ने समाज की इस बुराई को नष्ट करने हेतु अनेकबार जनजागरण-भक्ति आंदोलन के द्वारा सामाजिक समरसता निर्माण करने हेतु महान कार्य किया है। और आज भी अनेक सामाजिक संस्थाओं और समर्पित कार्यकर रचनात्मक सेवा कार्यो के माध्यम से हिन्दू समाज में अनुसूचित समाज के सर्वांगीण विकास हेतु कार्यरत हैं ।

संघ परिवार की अनेक संस्थाओं के सेवाकार्यों और सामाजिक नवचेतना जनजागरण के कारण वर्तमान में अनेक सामाजिक परिवर्तनों की सकारात्मक घटनाओं को हिन्दू समाज के सभी घटकों तक पहुंचाने हेतु यह मासिक प्रारंभ हुआ है ।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि डॉ. बाबा साहेब के सामाजिक न्याय प्राप्त करने हेतु संघर्षमय आंदोलन से ही दलित समाजको अपने मानव अधिकार प्राप्त करने की चेतना मिली है । इस 'अस्पृश्यता' की बुराई को अभी दूर करना बाकी है ऐसे समय में हिन्दू समाज में वर्तमान समयमें यह रूढि नये स्वरूपमें विकट और भयानक स्वरूप में बढती दिखाई पड़ती है । अस्पृश्यता की वेदना और व्यथा आज

भी भारत के अनेक गाँवों में यथावत है । इस बुराई को दूर करने हेतु सामाजिक समरसता अभियान द्वारा जन जागरण के माध्यम से समाज परिवर्तन के शुभ हेतु के साथ 'समरसता सेतु' का छोटा किन्तु राष्ट्रहित के लिए अति आवश्यक यह प्रमाणिक भीम प्रयास है । डॉ. बाबा साहब के सामाजिक न्याय - समानता, सन्मान प्राप्त करने हेतु यह समरसता अभियान उनके कारवाँ को आगे ले जाने का छोटा लेकिन हृदय से प्रयास है । आप सभी के सहयोग - मार्गदर्शन से ही राष्ट्र रक्षा के विचार को और बल मिलेगा ऐसा मुझे लगता है।

दीपावली का पर्व और नूतनवर्ष के निमित आपके अनेक शुभेच्छा के साथ मंगल कामना करते हुऐ - आगामी दिनो में अपने गाँव, तहसील, जिला स्थान पर 'सामाजिक समरसता' निर्माण करने हेतु निम्न प्रकार के कार्य - कार्यक्रम - सहयोग की अपेक्षा है ।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप हिंदू समाज-राष्ट्र तथा संस्कृति की रक्षा करना चाहते हैं तो सामाजिक समरसता अभियान-आंदोलन में हमारा सहयोग करें - सदस्य बनें - संपर्क करें।

देश के कई गाँवों में अभी भी हिन्दू समाजमें छुआछुतका भाव-जातिवाद विविध स्वरूपो में दिखाई देता है ऐसे गाँवों की तहसील/जिला स्तर पर एक सर्वे कर सूची बनाकर योजना बद्ध तरीके से सामाजिक भेदभाव दूर करने के लिए हृदय से प्रयास करना। विविध कार्यक्रम : समरसता यज्ञ, संतों की पदयात्रा, सहभोज और महापुरूषों की जयंति उत्सव स्थानीय लोगों के साथ आयोजित करना । गाँव के प्रत्येक वर्ग का सहयोग लेना एवम् सामाजिक आगेवान, सामाजिक कार्यकर भजनीक भगत, साहित्यकार, डॉक्टर, वकील तथा प्रबुद्ध नागरिक जो अनुसूचित जाति/जनजाति से हैं ऐसे महानुभावों का सार्वजनिक सम्मान कार्यक्रम आयोजित कर सामाजिक स्वीकृति सम्मान प्राप्त हो ऐसे प्रयास करना ।

अपनी तहसील/जिले में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति छात्रावास की सूची बनाकर संपर्क करना।

प.पू. रविदासजी महाराज/पू.महर्षि वाल्मीकि, पू. कबीर साहब, महामानव पू. डॉ. बाबा साहब अंम्बेडकर, महात्मा फुले, पू. शाहूजी महाराज जैसे महापुरुषों की जयंति का आयोजन करना और हिंदू समाजके सभी वर्ग, बिरादरी के लोग उत्सव में भाग लें, सहयोग करें । ऐसा आयोजन करना।

अनुसूचितजाति/जनजाति के तेजस्वी विद्यार्थिओं का सम्मान कार्यक्रम कर उन्हें प्रोत्साहित करना ।

वर्ष में एकबार सभी जाति बिरादरी के मुखिया, जाति के आगेवान विविध संस्थाओंके अध्यक्ष, सचिव सद्‌भावना बैठक में निमंत्रित कर सहभोज के साथ चर्चा-विमर्श-गोष्ठी सामाजिक समरसता की आवश्यकता जैसी बात अनौपचारिक ढंग से कर, सामाजिक समरसता निर्माण करना।

हिंदू समाज में विविध जाति के अपने संगठन, संस्थाऐं हैं उ.दा. : समस्त ब्रह्म समाज, पटेल समाज, क्षत्रिय - राजपूत समाज जैसे जाति के संगठन अस्पृश्यता हिंदू समाज का कलंक है हम इसमें नहीं मानते - हिंदवः सहोदराः सर्वेः न हिंदू पतितो भवेत् । ऐसे अस्पृश्यता नाबूदी के प्रस्ताव पारित करें ऐसा प्रयास करना ।

हिंदू समाज में अनेक मठ-मंदिर, आश्रम हैं वे समाज जागरण के केन्द्र बनें और रचनात्मक, आध्यात्मिक चेतना तथा सामाजिक उत्कर्ष के साथ सामाजिक समरसता निर्माण में सहयोग आशीर्वाद कर हमारे अभियान में जुडे ऐसा हृदय से प्रयास करना ।

अपने गाँव/तहसील/जिला स्थान पर हिंदू विघटन की कोई निंदनीय घटना घटती है तो ऐसे समय में तुरन्त ही वहाँ पहुँचना और हिंदू समाजकी एकता समरसता को तोडनेवाली षडयंत्रकारी घटना में सकारात्कम और हकारात्मक भूमिका निभाकर सामाजिक समरसता के कार्य कर ऐसे षडयंत्रों को विफल करना ।

अपने स्कूल-कॉलेज, हाईस्कूल में महापुरुषों की जयंति पर व्याख्यान माला वकृत्व स्पर्धा प्रवचन आयोजित करना।

समाजके प्रबुध्ध वर्ग डॉक्टर, अधिवक्ता, सामाजिक आगेवान, समक्ष छोटी छोटी गोष्ठी सामाजिक समरसता विषय पर आयोजन करना।

अनुसूचित जाति/जनजाति के पू. संतों का संमेलन आयोजित करना।

स्थानीय स्तर पर योजना बनाकर संत पदयात्रा कार्यक्रम आयोजित कर हर गाँव में अस्पृश्यता निवारण कर सामाजिक समरसता निर्माण करने के कार्य का आयोजन करना ।

स्थानीक स्तर पर सामाजिक समरसता निर्माण करनेवाला साहित्य प्रकाशित करना - पत्र - पत्रिका - स्टीकर्स ।

प्रत्येक शहर-तहसील, जिला केन्द्रों पर महोल्ला यात्रा का सुचारु रूप से आयोजन करना/ग्रुप-मिटींग या गाँव सभा वगेरे आयोजित कर समरसता सम्मेलन कर सकते है।

हिंदू परिवार मित्र गत हरिद्वार कुंभ में वि.हि.प की अ.भा.बैठक में आहवान किया है कि सभी वि.हि.प के पदाधिकारी वह जहाँ निवास करते हैं उनके पास वाली सेवावस्ती के एक परिवार को अपना मित्र बनाकर अनुसूचित जाति/जनजाति के ऐसे परिवार के सर्वांगीण विकास में सहयोग कर सामाजिक समरसता निर्माण करना।

मुठ्ठीधान्य योजना साधन संपन्न परिवार में से हर मास अन्न एकत्र कर जरूरयात वाले परिवार को अन्नदान करना।

अनुसूचित जाति समाज बंधुओं के आरक्षण बचाव को लेकर अनुसूचित जाति आरक्षण बचाव मंच के द्वारा / वि.हि.प के द्वारा जिल्ला कलेक्टर को आवेदनपत्र देना, धरना प्रदर्शन कर जन जागरण करना।

सामाजिक समरसता के विचार को गति देने के लिए सेवानिवृत्त वानप्रस्थी नागरिकों का संपर्क कर योजनाबद्ध तरीके से उन्हें इस कार्य में लगाना ।

जहाँ हमारी समिति निर्माण होती है वहाँ एक सेवाकार्य प्रारंभ करना चाहिए। जैसे कि : फ्री ट्युशन क्लास, बाल संस्कार केन्द्र, बुक बैंक योजना, योग-ध्यान शिबिर, व्यक्तित्व विकास के सेमिनार - युवाओं के लिए केरियर ओरिऐन्टल प्रोग्राम वगेरे ।

मंगल कामनाओं के साथ आप सभी के सहयोग की अपेक्षा सह ।

(देवजी रावत)

डॉ. अंबेडकर एक प्रेरक व्यक्तित्व

– रमेश पतंगे
समरसता मंच

अप्रैल १४ को पूज्य डॉ.बाबासाहब की जन्मतिथि है । महापुरुष के पुण्यस्मरण के दो तरीके हैं । पहला तरीका महापुरुष की श्रद्धाभाव से पूजा करने का है । शब्दसुमन से उसकी आरती उतारी जाती है । यह प्रायः सभी अंबेडकरभक्त करते हैं । 'डॉ.अंबेडकर प्रज्ञासूर्य थे, वे अतुलनीय थे, भगवान गौतम बुद्ध के बाद इतनी उँचाईवाला एक भी महापुरुष भारत में पैदा नहीं हुआ-इत्यादि ।' डॉ. बाबासाहबजी को ऐसी स्तुति से घृणा थी । बाबसाहबजी कहते थे - ''उन महान् पुरुषों के प्रति कृतज्ञ होने में कोई बुराई नहीं है, जिन्होंने जीवनभर देश की सेवा की है; किंतु कृतज्ञता की भी सीमा होती है । आयरिश राष्ट्रभक्त डैनिअल को केनल ने ठीक ही कहा है कि, 'कोई पुरुष अपने सम्मान की कीमत पर कृतज्ञ नहीं हो सकता, कोई महिला अपनी आबरू की कीमत पर कृतज्ञ नहीं हो सकती; और कोई राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता की कीमत पर कृतज्ञ नहीं हो सकता ।' यह चेतावनी किसी और देश के मुकाबले भारत के संदर्भ में अधिक आवश्यक है । क्योंकि, भारत की राजनीति में भक्त की जो भूमिका है, वह दुनिया के अन्य किसी भी देश के मुकाबले बहुत बड़ी है । भक्ति, आत्मा की मुक्ति का मार्ग हो सकती है; किंतु राजनीति में भक्त अथवा व्यक्ति पूजा निश्चय ही पतन और अंततः तानाशाही को ओर ले जाती है ।''

महापुरुष का स्मरण करने का दूसरा तरीका उसके विचारों का स्णरण करना है । व्यक्ति मरणधर्मा होता है, विचार अमर होते हैं । अमर विचारों का स्मरण करना ही सच्ची आदरांजलि है । महापुरुष का जीवन यानी उसका विचार । वह विचारों के लिए जीवित रहता है । २० जुलाई, १९२४ को 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' का जन्म हुआ । बाबसाहबजी ने इस पहले संगठन का निर्माण किया और अपने बंधुओं को तीन शब्द दिए - एज्युकेट, एजिटेट ॲन्ड ऑरगनाईज (शिक्षा, संघर्ष और संगठन) । मई, १९२४ को बार्शी (जिला सोलापुर) में परिषद का अधिवेशन हुआ । इसमे पूज्य डॉ. बाबासाहबजी का भाषण हुआ । हम यह कह सकते हैं कि सार्वजनिक स्थान से दिया गया यह पहला वैचारिक भाषण है । उसका अपना एक महत्त्व है ।

यह लम्बा भाषण है । उसके कुछ महत्त्व के अंश यहाँ पर हम रखते हैं । अंबेडकरजी कहते हैं - ''तात्विक दृष्टि से हिंदू धर्म अन्य किसी भी धर्म से श्रेष्ठ है । इस हिंदू धर्म में 'सर्वांभूति एक आत्मा' मूलतत्व है । इस उदात्त तत्त्व के अनुसार अगर समाज संगठित हो जाता है तो जिस प्रकार दीपक सब के लिए प्रकाश देता है, या जिस प्रकार वृक्ष तोड़ने वालों को भी और पानी देने वालों को भी छाया देता है, हर हिंदू की समबुद्धि हो जाती है । लेकिन हिंदू समाज का व्यावहारिक स्वरूप अत्यंत घृणास्पद हो गया है । आचार और विचार में मेल नहीं है । सबमें एक आत्मा है, ऐसा कहना और मनुष्य को अपवित्र और अस्पृश्य कहना कितने आश्चर्य की बात है । सबसे अधिक गुस्सा आनेवाली बात तो यह है कि हिंदू, ईसाई और मुसलमानों को समदृष्टि से देखते हैं । वे गोवध करते हैं,'' फिर भी उनका स्पर्श पवित्र माना गया है ।''

इसी भाषण में डॉ.बाबासाहबजी ने धर्मांतरण के प्रश्न पर भी चर्चा की है । जब तक अस्पृश्य हिंदू है, तब तक उसको अस्पृश्य माना जाएगा, इसीलिए अस्पृश्यता छोड़ने के लिए धर्मत्याग करना चाहिए । हम यह देखते हैं कि १९२४ से लेकर १९३५ तक डॉ.बाबासाहबजी ने हिंदू धर्म में सुधार करने का जी-जान से प्रयास किया । अपने विचार के अनुसार हिंदू लोगों को सामाजिक संगठन बनाना चाहिए इसके लिए प्रयोग किया । हिंदू समाज के संगठन में जो दोष उत्पन्न हुए हैं, उसे दूर करने का प्रयास किया । आखिर १९३५ में उन्होंने येवला में हिंदू धर्म का त्याग करने की घोषणा की । १९५३ में बौद्ध धर्म को अपना लिया । बौद्ध धर्म सनातन धर्म की परिष्कृत आवृत्ति है, उसे नहीं भूलना चाहिए ।

हिंदू समाज से जातीय अहंकार को समाप्त करने के लिए उपाय के बारे में डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर चर्चा करते हुए कहते हैं - ''अस्पृश्यता और जातिभेद व्यक्ति के नाम में समाविष्ट है । इसलिए जातिवाचक नामों का त्याग करना चाहिए । मेरा ऐसा मत है कि सभी हिंदुओं को खुद को केवल 'हिंदू' ही कहना चाहिए, जाति का उल्लेख नहीं करना चाहिए । किसी को भी खुद को ब्राह्मण, मराठा, महार, चमार, मांग इत्यादि न कह कर केवल हिंदू कहना चाहिए । इस से समाज में समता उत्पन्न होगी और एकता उत्पन्न होगी । यह जब होगा तब होगा, लेकिन यह करने के लिए क्या करना चाहिए यह प्रश्न है ।''

इस प्रश्न को आगे बढ़ाते हुए डॉ.बाबासाहब कहते हैं - ''हममें संघशक्ति उत्पन्न होनी चाहिए, सभी अस्पृश्योंका संगठन होना चाहिए ।'' १९२४में स्वराज्य प्राप्ति का आंदोलन चल रहा था । बाबासाहब जानते थे, आज या कल सत्तांतरण होगा । भारत में प्रजातंत्र आएगा । सबको समान राजनीतिक अधिकार मिलेंगे । राजनीतिक दृष्टि से सभी समान हो जाएंगे । राजनीतिक क्षेत्र में समानता आने के बाद वर्णाश्रम नहीं रहेगा । इसी कारण हमको संगठित होना चाहिए ।

डॉ.बाबासाहब ने १९२४ में एक सत्य को सबके सामने रखते हुए कहा, ''स्वातंत्र्य का सत्तासंघर्ष हिंदू और मुसलमानों के बीच में है । अंग्रेज यहाँ से चले जाएंगे । फिर सत्ता कौन संभालेगा ?'' मुसलमान सत्ताधीश होना चाहते थे, हिंदू भी सत्ताधीश होना चाहते थे । बाबासाहब कहते हैं-''आज हम सबसे नीचे हैं । फिर भी हिंदू-मुसलमान संस्कृति संघर्ष में हमारी संख्या का अनन्यासाधारण महत्त्व है । अगर हमने संघशक्ति उत्पन्न की तो हमे जो चाहेंगे वह प्राप्त कर सकते हैं । इस सघर्ष में अगर हम (सवर्ण)हिंदू का पक्ष लेते हैं तो वे अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए तैयार हो जाएंगे ।'' (संक्षिप्त)

हम देखते हैं कि डॉ. बाबासाहब हिंदू, हिंदूत्व विरोधी थे, यह कहने का आज कल फैशन है । डॉ. बाबासहब का वैचारिक प्रवास हिंदू समाज के अंदर मूलगामी बदलाव के धरातल पर शुरू हुआ और १९५६ में बौद्ध धर्म की दीक्षा से समाप्त हुआ । जैसे ऊपर कहा गया है, बौद्ध धर्म सनातन धर्म का ही, समता, बंधुता, स्वातंत्र्य और न्याय का रूप है । १९५० में डॉ. बाबासाहबजी ने हिंदू कोड बिल संसद में पेश किया । आखिर तक उनका प्रयास रहा कि अपने हिंदू समाज के अंदर मूलगामी परिवर्तन हो । **(अनुसंधान पृष्ठ ७)**

शुभेच्छा संदेश

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

प्रधान कार्यालय : डॉ. हेडगेवार भवन, महाल, नागपुर – 440032.
दूरभाष : (0712) 2723003; 2720150 फैक्स नं. : 2721589; E-mail : hedgewarbhavan@rediffmail.com
सरसंघचालक : मोहन म. भागवत सरकार्यवाह : सुरेश (भय्या) स. जोशी

तिथि : फाल्गुन अमावस्या, २०६६ दिनांक : १५.०३.२०१०.

बन्धुवर श्री देवजी रावत(सम्पादक)!

सप्रेम नमस्कार ।

अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि आप १४ अप्रैल डॉ.बाबासाहब अंम्बेडकर जयन्ती के पुनीत अवसर पर ''समरसता सेतु'' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ करने जा रहे हैं । अत्यन्त सकारात्मक घटनाओं के माध्यम से यह मासिक पत्रिका हिन्दू समाज में 'सामाजिक समरसता' के स्वाभाविक गुण को, जो कि उसकी युग-युगीन मौलिक विशेषता है, पुनः जागृत करने का गुरुतर कार्य करेगी । और, जन-समाज को 'सामाजिक समरसता'हेतु कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करने में सक्षम सिद्ध होगी ।

हिन्दुत्व को शक्तिशाली बनाने की दिशा में 'समरसता सेतु' द्वारा समाज में परिवर्तन हेतु यह प्रयास सफल हो, यशस्वी हो । यही ईश्वर से प्रार्थना।

शुभेच्छु

(भैयाजोशी, सरकार्यवाह)

विश्व हिन्दू परिषद ॐ VISHWA HINDU PARISHAD

Registered under Societies Act. 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Register of Societies,Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सैक्टर-६, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-११००२२ (भारत)
SANKAT MOCHAN ASHRAM, RAMAKRISHNA PURAM-VI, NEW DELHI - 110022 (BHARAT)

फाल्गुन शु. प्रतिपदा १५ फरवरी, २०१०

प्रिय श्री देवजीभाई रावत

जयश्री राम ।

आपके पत्र से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप 'समरसता सेतु' मासिक पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहे हैं ।

हमारे राष्ट्र में अनेक महापुरुषों, पूज्य संन्तो ने सामाजिक चेतना जगाकर, आन्दोलन करके अस्पृश्यता जैसी बुराई को समाप्त करके सामाजिक समरसता निर्माण करने का प्रयास किया । विश्व हिन्दू परिषद भी अनेक सामाजिक सेवाकार्यों के माध्यम से समरसता के कार्य में लगा है । यह आज की आवश्यकता भी है । आपकी पत्रिका भी इस पवित्र कार्य में सहयोगी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है ।

पत्रिका प्रकाशन के उद्देश्यों की सफलता के लिए प्रभु के श्रीचरणों में विनम्र प्रार्थना है ।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय

अशोक सिंहल

अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

विश्व हिन्दू परिषद ॐ VISHWA HINDU PARISHAD
Registered under Societies Act. 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Register of Societies,Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सैक्टर-६, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-११००२२ (भारत)
SANKAT MOCHAN ASHRAM, RAMAKRISHNA PURAM-VI, NEW DELHI - 110022 (BHARAT)

सुहृद बन्धुवर,

सप्रेम जय श्रीराम ।

आपके पत्र द्वारा जानकारी प्राप्त हुई कि ''समरसता सेतु'' मासिक पत्रिका का शुभारम्भ श्रद्धेय डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जयन्ती के अवसर पर किया जा रहा है । डॉ.अम्बेडकर ने कहा था कि ''जब समाज अपने अतीत को छोड़ रहा हो और भविष्य का अनुमान लगा रहा हो, तब विवेक ही वह कसौटी है, जिस पर किसी बात को परखना चाहिए । आदमी के जीवन में अवसरों का समुद्र लहराता है । उसे इन अवसरों का सही उपयोग करना चाहिए, तभी उसे गरिमा प्राप्त हो सकती है ।''

सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत लोगों के लिए डॉ.अम्बेडकर का जीवन एवं विचार प्रेरणा पुंज है । विश्व हिन्दू परिषद अपने ध्येय वाक्य ''हिन्दवः सोदराः सर्वे, न हिन्दू पतितो भवेत् । मम दीक्षा हिन्दू रक्षा, मम मंत्रः समानता ।'' के अनुरूप जन-जन को आत्मीयता एवं समरसता से आप्लावित कर रही है । सामाजिक रूपान्तरण का मूक शंखनाद कर रही तमिलनाडु की 'ग्राम कोविल पुजारीगल' परियोजना के साथ ही तीस हजार से ज्यादा विविध सेवा प्रकल्पों के माध्यम से विश्व हिन्दू परिषद हिन्दू समाज को एक सूत्र में पिरोने हेतु सतत् प्रयत्नशील है ।

स्मरण रहे कि विधर्मियों के हस्तक बन कुछ हिन्दू नामधारी धर्मान्तरण को बढ़ावा दे रहे हैं । अनु जाति/अनु. जनजाति के आरक्षण में कटौती हेतु केन्द्र सरकार के प्रयासों के विरुद्ध विहिप संघर्ष में आपके साथ है । केन्द्र सरकार का यह प्रयास हम किसी भी कीमत पर सफल नहीं होने देंगे । डॉ. अम्बेडकर ने कहा था दलितों को ईसाई या इस्लाम धर्म नहीं अपनाना चाहिए । इस तरह वे हिन्दू धर्म से ही नहीं, हिन्दू संस्कृति से भी बाहर चले जाएंगे ।''

आशा है कि 'समरसता सेतु' हिन्दू समाज को एक माला में गूँथने के साथ ही प्रचण्ड प्रतिरोधात्मक हिन्दू शक्ति जाग्रत करेगी ।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय

प्रवीण तोगड़िया

अन्तरराष्ट्रीय महामंत्री

विश्व हिन्दू परिषद

शुभेच्छा संदेश

श्रीगोपाल व्यास
बी.ई. (ऑनर्स), एल.एल. बी.
संसद सदस्य
(राज्य सभा, छत्तीसगढ़)

|| श्री ||

रायपुर दूरभाष : (0771) 2572881
दिल्ली फैक्स : (011) 23091265
दूरभाष : (011) 23092363
E-mail : shreegopal.vyas@sansad.nic.in
: shreegopal.vyas@yahoo.co.in

बंधुवर देव जी,

सादर नमस्कार ।

आपका 'समरसता सेतु' पर पत्र मिला है । आप इस नाम से एक मासिक प्रारंभ कर रहे हैं, यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई । आपने इसके लिए १४ अप्रैल याने बाबा साहेब अंबेडकर जी का जन्म-दिन चुना यह योग्य ही है । एक इसी दिन मुझे उनके जन्म-स्थान महु(म.प्र.)में स्व. मा.दत्तोपंज जी ठेंगड़ी जी के साथ जाने का अवसर मिला था । उन्हीं के कहने से मैंने श्री धनंजय कीर लिखित अंबेडकर जी की जीवनी पढ़ी और जाना कि यदि डॉ. अंबेडकर बौद्ध न बनकर यदि ईसाई या मुसलमान बन गये होते ते हिन्दू समाज व राष्ट्र की समस्या कितनी बढ़ जाती ।

इनमें से लोग अपने आपको दलित कहकर अधिकार माँग रहे हैं । ये प्रयास हमारे अनुसूचित जाति के लोगों की सुविधायें कम करने का प्रयास हैं । अतः सबको संगठित होकर इसका सामना करना होगा । यदि ये बंधु यहाँ दलितत्व का अनुभव कर रहे हों तो उन्हें वापस हिन्दू समाज में आने से कौन रोक रहा है ?

शुभकामनाओं के साथ ।

श्रीगोपाल

श्रीगोपाल व्यास

विश्व हिन्दू परिषद - आध्र प्रदेश
विजयवाडा शहर में सामाजिक समरसता के कार्य हेतु दि. ६-१०-२०११ बेठक संपन्न हुई ।

— कन्ना भास्कर - विजयवाडा

विशेष प्रतिनिधि

दि. ६-१०-११ शुभ दिनांक विश्व हिन्दू परिषक के केंद्रीय मंत्री - सामाजिक समरसता अभियान श्री देवजीभाई रावत की उपस्थितिमें विजयवाडा शहर में आगामी कार्य हेतु बैठक संपन्न हुई । १५ प्रतिनिधि ने भाग लिया । सामाजिक समरसता कार्य और आयोजन के साथ कमिटि निर्माण करने का तय किया गया । बैठक में पूर्व आंध्र प्रदेश के प्रान्त संगठन मंत्री श्री कन्ना भास्कर तथा श्री सदाशीव वगेरे पदादिकारी उपस्थित रहे । आगामी समय में सामाजिक समरसता अभियान चलाने का संकल्प बैठक में लिया गया ।

विश्व हिन्दू परिषद ॐ VISHWA HINDU PARISHAD
Registered under Societies Act. 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Register of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-११००२२ (भारत)
SANKAT MOCHAN ASHRAM, RAMAKRISHNA PURAM-VI, NEW DELHI - 110022 (BHARAT)

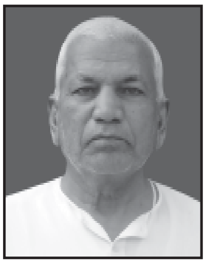

बन्धुवर श्री देवजीभाई रावत,

सादर सप्रेम नमस्कार ।

आशा है कि आप सम्पूर्ण परिवार सहित सब प्रकार स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे । दिनांक १२ फरवरी, २०१० को आपका पत्र मिला, धन्यवाद ।

आपका विचार सराहनीय है; और समय की माँग को पूरा करने वाला है । ईश्वर से प्रार्थना है कि आपके पुण्य संकल्प को पूर्ण व यशस्वी करे । समाज को समरस करने में पूरा संघ परिवार अपने-अपने ढ़ंग से लगा है । गत १३ सौ वर्षो से संघर्षरत, दमन व उत्पीड़न का शिकार, राजनीतिक दासता से जकड़ा यह हिन्दू समाज अपने को मिला है । मानसिक दासता से आकन्ठ डूबे इस समाज को उबारने में सैकड़ों महापुरुषों का प्रयास भी हजारों वर्षो से हो रहा है । इस कारण आज हम सफळता के निकट हैं ।

संघ के लम्बे प्रयास के बाद आज हजारों वर्षो के इतिहास में पहली बार एक अखिल भारतीय तंत्र खड़ा हो गया है, जो तन-मन से समाज को समरस करने के लिए तैयार है । बस थोड़े और प्रयास की आवश्यकता है । उस प्रयास में हम सबलोग भी लगे हैं । आपकी पत्रिका ''समरसता सेतु'' एक सेतु का काम करेगी, यही अपेक्षा है ।

शेष कुशल ।

आपका बन्धु

रामफलसिंह

केन्द्रीय मंत्री

विश्व हिन्दू परिषद

पुण्यस्मरण

सामाजिक समरसता अभियान आयाम के परमश्रद्धेय पथदर्शक स्वर्गीय, रामफलजीके कार्यो एवं विचारों को 'समरसता सेतु' पत्रिका के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने के विनम्र प्रयास के स्वरूप यह प्रथम अंक हम उन्हें सादर समर्पित कर स्मर्णांजलि समर्पित करते हैं ।

— संपादक
'समरसता सेतु'

जय भारत जय अम्बेदकर जय वाल्मीकि

भारतीय अम्बेदकर/वाल्मीकि पंचायत

* अध्यक्ष :
1. वाल्मीकि समाज, राँची।
2. पिछड़ा वर्ग महासंघ
बरियातु, राँची।
* सचिव :
भारतीय अम्बेदकर/वाल्मीकि पंचायत
केन्द्रीय समिति
* संगठन मंत्री :
अ०भा०सफाई मजदुर काँग्रेस
* सदस्य :
भंगी मुक्ति अनुश्रवण समिति, राँची।

वाल्मीकि समाज राँची

सजना राम
7/4, युनिवर्सिटी कॉलोनी, बरियातु, राँची-9
☎-0651-2540795
-94311-76472

कार्यालय :
वाल्मीकि नगर,
हरमू, राँची।

व्यथा सजना राम वाल्मिकी की

माननीय श्री,

मेरी जिन्दगी में कुछ भाव बीती सच्चाई का वर्णन करना है। मैं एक हरिजन भंगी जाति का सदस्य हूँ। मेरे दादा, माता-पिता १९३२ में राज्य बिधर राँची में नौकरी करने आये थे। उस समय अंग्रेजों का शासन था. मेरा जन्म राँची में ही हुआ। मेरे परिवार के लोग नगरपालिका मे सफाई का कार्य करते थे। उस समय मात्र ७ रुपये प्रति माह मिलता था। जब हमारा परिवार राँची आया तब उस समय हमारी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। यहाँ के बच्चों को स्कूल जाता देख मेरे भी मन मे कई बार स्कूल जाकर पढाई करने की चेष्टा हुई। पर मुझे अपनी इस इच्छा को मन में ही दबाना पड़ा, क्योंकि यहाँ के लोग छुआछूत में बहुत ज्यादा विश्वास करते थे। इस छुआछूत के कारण मैं कभी स्कूल नहीं जा सका। कुछ दिनों के बाद मैं अपने माता-पिता के साथ राजस्थान चला गया। मैं राजस्थान में फतेहपुर शेखावाटी का रहनेवाला हूँ। उस वक्त राजस्थान में भी छुआछुत प्रणाली थी। इस समय राजस्थान में भंगी जाति को उच्चजाति के लोग बहुत परेशान करते थे उन्हें अछूत माना जाता था। भंगी जाति के लोगों को मंदिर में जाने की अनुमति नहीं थी। जिस रास्ते में भंगी जाति के लोग आया-जाया करते थे उस रास्ते का प्रयोग उच्चजाति के लोग नहीं करते थे। यहाँ तक कि उनके जूते पहनने पर भी रोक लगा दी गई। छाता का प्रयोग नहीं करने दिया जाता था। शादी-ब्याह में नाच-गाना, ढोल बजाना सब कार्य में रोक थी। उन्हें घोडों पर चढकर शादी नहीं करने दी जाती। हमारा राजस्थान एक रेतीली जगह हैं। जहाँ गर्मियों में रेत काफी गर्म होती हैं। जूता पहनने की अनुमति न होने कारण लोग अपने पाँव को जलने से बचाने के लिए आक का पत्ता और कपडा लपेटकर चलते थे। बाजार से कोई सामान की आवश्यकता होती तो दुकानदार उस वस्तु को एक दूर स्थान पर रख देता जहाँ से हम उस वस्तु को लेते थे और हमारे द्वारा दिये गये पैसे को दुकानदार धोकर ही लेता। कुँआ जहाँ पर कुत्ते , ऊँट और सभी जानवर पानी पीते थे वहाँ से पानी लाकर पीना पड़ता था। हमारे बच्चों को स्कूल में पढ़ने नहीं दिया जाता था। मेरा विवाह १९४३ में गाँव बिदासर जिला चुरु राजस्थान में हुआ। उस समय गाड़ी का साधन नहीं था। हमारी जाति के लोग ऊँट पर बैठकर बारात ले जाते थे। राजस्थान में यह रीति-रिवाज था कि जिस व्यक्ति की शादी होती वह राणा के द्वार जाकर गढ के नीचे खड़े हो राजासाहब को झुककर नमस्कार करता। मैंने और मेरी धर्मपत्नी ने भी शादी के तुरन्त बाद राणासाहब के द्वार जाकर नमस्कार किया। तब राणासाहब ने हमें ५ रुपये दिये और कहा अब जाओ। यह वहाँ की परम्परा थी जो सभी को निभानी पड़ती थी। उसके बाद मैं अपनी पत्नी को छोड़कर राँची आ गया। राँची आने के बाद १९४९ में मुझे राँची कॉलेज में एक सफाई कर्मचारी की नौकरी पर रखा गया। और हमारे कॉलेज की तरफ से हमारे हरिजन कोलोनी हरमू रोड़ में हरिजनों के लिए एक रात्रि पाठशाला का निर्माण किया गया। जहाँ जाकर मैने अपनी पढ़ाई शुरू की और कक्षा १०वी की परीक्षा पास की। मेरे कॉलेज में मेरी ईमानदारी को देखते हुए मुझे चार प्रमोशन का सौभाग्य प्रात हुआ। मैं एक अच्छे पोस्ट पर कार्यरत रहा। इस दौरान मुझे एक और सौभाग्य प्राप्त हुआ। १९५६ में मुझे बाल्मीकि समाज का महामंत्री नियुक्त किया गया। इस नियुक्ति से मैंने उन सब बुराईयों को खत्म करने का निर्णय किया जो मैंने अपने बचपन में सही थी, महसूस की थी। जब मैंने अपने समाज की ओर देखा तो मुझे उसमें बहुत सी गंदगी दिखी। उस समय हमारी जाति के लोग ऐसे बहुत कार्य करते थे जो सही नहीं था। जैसे शादी-ब्याह में जुठा उठाकर खाना, मरे हुए मुर्दे का वस्त्र लाकर उन्हें पहनना। लोग शराब पीते और जुआ खेलने में इस कदर व्यस्त थे कि उन्होंने अपना भविष्य भी दाव पर लगा रखा था। परिवार में बच्चों पर कोई ध्यान नही दिया जाता था। जब मैंने अपने समाजकी यह स्थिति देखी तो मुझे बहुत तकलीफ हुई। और मैने यह फैसला लिया के हमारे समाज का हर व्यक्ति अपने हिस्से की खुशी हासिल करेगा। मैंने अपने समाज की बुराईयों को जड़ से मिटाने के लिए कई जगहों पर बाल्मिकी समाज का अधिवेशन करावाया। मैंने खुद जाकर १९६० में अपना पहला अधिवेशन झरिया धनबाद में कराया। दूसरा अधिवेशन आसनसोल बंगाल में कराया। तीसरा अधिवेशन वास में कराया और चौथा राँची में कराया जहाँ पर सारे प्रस्ताव वारित किये गये। जुआ खेलना, शराब पीना और सारे बुरे कार्यो पर प्रतिबन्ध लगा। समाज में यह निर्णय लिया गया कि किसी भी बच्चे का बाल-विवाह न हो और शिक्षा पर

हिन्दू जागो

जोर दिया गया । शादी के लिए एक लड़की की शिक्षा और बालिग होना दोनों पर बल दिया गया । लडकी की शिक्षा मैट्रिक तथा लड़के की शिक्षा ग्रेज्युएट होना अनिवार्य था । सरकार से भी माँग की गई कि मल सर पर ढोकर फेकना बंध कराये और भंगी जगह हमे वाल्मीकि का जाति प्रमाण पत्र दिया जाये । १९७५ मे युनिवर्सिटी कॉलोनी की तरफ से एक मकान ७/४ आबंटन हुआ । मैंने मकान में एक ताला लगाया और उसी वक्त अपनी पत्नी कि मकान दिखाने के लिए चला गया। जब मैं अपनी पत्नी के साथ घर लौटा तो देखा की मेरे मकान पर एक और ताला लगा है । मैंने उस ताले को तोडकर फेंक दिया । और हरमू हरिजन कॉलोनी को छोड़कर यूनिवर्सिटी कॉलेनी में रहने लगा । लेकिन यहाँ पर जो उच्चजाति के लोगों थे उन्हें मेरा यहाँ रहना पसंद नहीं था । उन्हें लगा मैं हरिजन जाति का हूँ तो मेरी आदतें बुरी होंगी । वह कहते कि यह हरिजन है यहाँ रहेगा तो मास मछली खायेगा, शराब पियेगा । हमारे बच्चे भी व्यसन सीखेंगे । इसी कारण एकदिन यहाँ के उच्चजाति के लोगों ने हमारे घर पर रात १बजे गुन्डों को भेज दिया । उन गुंन्डों ने हमें बहुत सी धमकियाँ दी । कहा तुम्हारी माँ-बहन को खटिया समेत उठाकर ले जायेंगे । तब मैंने अपने समाज के लोगों को एतत्र किया और अपनी परेशानी बताई । तब हजारो की संख्या में पुरुष और महिलाएँ डंडा और झाड़ु लेकर उस गुंडे के घर जा पहूँचे । तब वह गुंडा मेरे पैर पर गिर गया और उसने यह बताया कि यह कार्य उसे दारू पिलाकर किसी ने रुपये के बल पर आपको यहाँ से भगाने के लिए करवाया था । आज मेरी उम्र ८२ वर्ष है । मैंने अपने जीवन में कभी शराब या जुआ जैसी कोई भी गलत आदतें आने नहीं दी । जो लोग अपने आपको उच्चजाति का कहते हैं आज वहीं लोग इस बुराई का शिकार हैं । मेरी इसी ईमानदारी और कर्म को देखकर आज यहाँ के लोग मुझे बहुत इज्जत देते हैं । उनका हमारे घर आना और हमारा उनके घर जाना बना रहता हैं । अब हम यहाँ एक समाज की तरह रहते हैं । हर पर्व त्यौहार को एक साथ मनाते हैं । हर कार्य को एक साथ करते हैं । शादी-ब्याह में हम उनके घर जाते है और वो हमारे घर आते है । हाँ मुझे इनके बीच में आने पर एक प्रेरणा मिली कि हर इंसान अपनी जाति से महान नहीं होता । वह अपनी ईमानदारी और कर्म से महान और उच्च होता है । इसका उदाहरण हैं मेरे बच्चे जो आज शिक्षित और संस्कारी होने के कारण अपने जीवन में बहुत खुश हैं । आज मेरा परिवार मुझ पर और अपने आप पर बहुत गर्व महसूस करता है, कि उन्हें भी समाज में वही इज्जत मिलती है जो एक उच्च जाति के लोंगों को मिलती हैं । उन्हें मुझ पर गर्व है कि मैंने उन्हे वह संस्कार और शिक्षा दी जो एक काबिल इंसान में होनी चाहिए । मेरी एक पोती है हँसा पवार । वह उर्सुलाइन कॉन्वेन्ट स्कूल में पढ़ती थी । एक दिन उसे स्कूल डायरी मिली जिसमें उसे अपनी जाति के बारे में लिखना था। तब मैने उसे बताया कि हम हरिजन हैं । वह दूसरे दिन स्कूल गई और उसकी क्लास टीचर ने कहा उपजाति लिखना है । तब उसने मुझसे कहा तो मैंने बताया कि हम भंगी है । और वह बोली दादा हम भंगी नहीं हैं । आप ऐसा क्यों कह रहे हैं और वह रोने लगी । मैने अपने बच्चों को कभी नहीं बताया कि हम भंगी है उन्हें वही शिक्षा और संस्कार दिये जो उच्चजाति के बच्चों को मिलते हैं । तब मैंने खुद से यह सवाल किया कि मेरी पोती के मन में यह हीन भावना क्यों आई । क्योंकि आज हमारे जाति के लोगों को इसी हीन भावना से देखा जाता है । उन्हें आज भी अछूत समझा जाता है । मैंने अपने अनुभवों और कार्यों के दौरान यह जाना कि आज भी भंगी जाति के लोगों को अछूत ही समझा जाता है आज भी समाज के पुराने विचार रखने ४०% वाले लोग गाँव या शहरों में इन्हें अछुत ही मानते हैं । इसलिये मैं निवेदन करता हूँ कि हमारी उपजाति भंगी मेहतर को हटाकर बाल्मीकि उपजाति करने का सौभाग्य प्राप्त करें ।

आपना विश्वासी

सजना राम

(अनुसंधान पृष्ठ ७ चालु....)

डॉ.आंबेडकर एक प्रेरक व्यक्तित्त्व

११ जनवरी, १९५० को सुंदराबाई हॉल में हिंदू कोड बिल पर उनका भाषण हुआ । वे हिंदू कोड बिल क्यों लाना चाहते थे ? उन्हीं के शब्दो में -

“हिंदू कोड बिल के पीछे दो उद्देश्य हैं । ? १. हिंदू कानून का सुसूत्रीकरण” २. हिंदू कानून की कुछ शाखाओं में सुधार करना ।” हिंदू कानून में पाँच प्रकार के सुधार चाहते थे । पहला सुधार, विवाह तथा दत्तक विधान के संबंध में था । बाबासाहब कहते हैं - “नए कानून के अनुसार जातिबंधन समाप्त होंगे । आंतरजातीय विवाह तथा दत्तक विधान को मान्यता मिलेगी । दूसरा सुधार एक पत्नीत्व कानून का है । तीसरा सुधार विवाह विच्छेद संबंधी है । किसी विशिष्ट परिस्थिति में विवाह विच्छेद कानूनी ठहराया जाएगा । चौथा सुधार पिता द्वारा दत्त संपत्ति(प्रॉपर्टी)के संबंध में है । इस सुधार के अनुसार, पिता अपनी संपत्ति का विनियोग करने का उत्तराधिकारी माना गया है । पाँचवां सुधार स्त्री को संपत्ति में अधिकार देने का है । पिता के संपत्ति में स्त्री को भी हिस्सेदार माना गया है ।”

यह भाषण भी विस्तृत है । पाठकों को आश्चर्य होगा कि इस भाषण में अपने कथन के समर्थनार्थ डॉ. बाबासाहब ने पराशर स्मृति, बृहस्पृति स्मृति और अंत में मनुस्मृति का आधार लिया है । ये कहते हैं कि, मनु का मानना है संपत्तिका निर्माण होते रहना चाहिए । वह बढ़नी चाहिए । इसलिए मनु संपत्ति पर अन्य पुत्रों का अधिकार भी मान्य नहीं करता । आज का (हिंदु कोड बिल प्रस्थापित करने का)कानून ‘हिंदू शास्त्र संमत’ है । सनातनी हिंदूशास्त्र का पठन नहीं करते हैं ।”

हिंदू कोड बिल के आधार पर डॉ. बाबासाहब हिंदू का संवैधानिक संगठन करने का प्रयास करते हैं । सभी हिंदुओं को कानूनी तौर पर एक समान धरातल पर लाने का उनका प्रयास था । यह कोड किस पर लागू होगा ? बाबासाहब कहते हैं-“यह कोड सनातनी, आर्य समाजी, हिंदू, बौद्ध, जैन आदि सब पर लागू होगा ।” उपासना पद्धति की भिन्नता रहेगी लेकिन सबकी नागरी संहिता समान रहेगी । यह एक अद्‌भुत प्रयास था । प्रश्न यह उठता है कि अगर डॉ. बाबासाहबजी के मन में हिंदू, हिंदूत्व व हिंदू धर्म के विषय में घृणाभाव रहता तो हिंदू कोड बिल का प्रयास वे क्यों करते ? वे कह सकते थे कि, खड्डे में जाए हिंदू समाज । मुझे उससे क्या लेना देना ! यह महान आत्मा इस प्रकार से नहीं सोचती थी । अपना समाज जातिमुक्त हो, उसकी ‘हिंदू’ यह एक पहचान हो, इसका एक कॉमन सिविल कोड हो, यह उनकी तीव्र इच्छा थी । इसी कारण इस महान आत्मा का कृतज्ञ भाव से, श्रद्धायुक्त अंतःकरण से और ऋषि ऋणका स्मरण करते हुए हमें उन्हें भावांजलि अर्पण करनी चाहिए ।

जनजातियो में संस्कृति बचाने की उठी लहर

जनजातीय क्षेत्रों में ईसाईकरण पर 'फोरम फॉर सोशल जस्टिस' की दो दिवसीय कार्यशाला

— तरुण सिसोदिया

'...तुम लोग हिन्दू हो, तुम्हारा इस रास्ते से जाना मना है। इस रास्ते पर दोबारा आओगे तो अच्छा नहीं होगा।'

उड़ीसा के कंधमाल में ईसाइयों द्वारा वनवासी बंधुओ से किए जा रहे दुर्व्यवहार को बताते हुए नंदिनी प्रधान ने यह बातें कहीं। उड़ीया भाषा में बोलते हुए नंदिनी ने कहा कि 'हम पक्के रास्ते से जाते हैं तो ईसाई मना करते हैं, कहते हैं यह रास्ता हिन्दुओं के लिए नहीं है। वे हमसे झगड़ा करते हैं, मारपीट करते हैं। जंगल के रास्ते शहर जाने पर बहुत समय लगता है। अगर हम शहर नहीं जाएंगे तो बच्चों के लिए राशन कैसे आएगा ? ऐसे तो हमारे बच्चे भूखे ही मर जाएँगे'। नंदिनी ने अपनी यह व्यथा गत दिनों नई दिल्ली में 'फोरम फॉर सोशल जस्टिस' द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में निर्णायक मंडल के समक्ष कही। 'ईसाईकरणः भारत की जनजातियों की आस्था, संस्कृति अर्थव्यवस्था और जीवन पर प्रभाव' विषय पर ५-६ सितम्बर को चली कार्यशाला में देशभर के विभिन्न राज्यों से आए वनवासी बंधुओं ने ईसाइयों द्वारा किए जा रहे उत्पीड़न के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यशाला में छत्तीसगढ, झारखंड, उड़ीसा, गुजरात, मध्यप्रदेश सहित १४ राज्यों के कुल १०५ वनवासी बंधुओं ने भाग लिया। रा.स्व.संघ के अ.भा.कार्यकारी मंडल के सदस्य श्री राममाधव भी कार्यशाला में उपस्थित रहे।

कार्यशाला का शुभारम्भ ५ सितम्बर की सुबह निर्णायक मंडल के सदस्यों -श्री के.पी.एस.गील (पूर्व पुलिस महानिदेशक, पंजाब), स्वामी शांतात्मानंद (प्रमुख, रामकृष्ण मठ, दिल्ली)आदि द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। तत्पश्चात श्री गिल ने अपने उदबोधन में कहा कि अंग्रेज देश छोड़कर जाने से पहले हम पर कुछ ऐसी शर्तें थोपकर गए, ताकि उन्हें वापस बुलाया जा सके। मतांतरण के संबंध में बोलते हुए उन्होंने कहा कि मतांतरण का कारण जनजातियों की आर्थिक स्थिति ठीक न होना, लालच, धोखाधड़ी, बल प्रयोग तथा मैकाले की शिक्षा पद्धति है। वहीं स्वामी शांतात्मानंद ने जनजातीय क्षेत्रों में विकास के न पहुंचने को मतांतरण का कारण बताया। उन्होंने कहा कि ईसाई मिशनरी जनजातीय संस्कृति को तहस-नहस कर रहे हैं। स्वामी शांतात्मानंद ने आह्वान करते हुए कहा कि सक्षम लोग जनजातीय क्षेत्रों में जाकर सेवा कार्य करें।

उद्घाटन सत्र के बाद वनवासियों ने निर्णायक मंडल के समक्ष अपनी पीड़ा व्यक्त की। निर्णायक मंडल में श्री के.पी.एस.गिल तथा स्वामी शांतात्मानंद के अलावा श्री पी.सी.डोगरा, न्यायमूर्ति डी.एस.तेवतिया, न्यायमूर्ति वी.के.गुप्ता, श्री जे.के.बजाज, एयर मार्शल आर.एस.बेदी, श्री विनोद बवारी, श्री भवदीप कंग, सुश्री ऊषा गोयल, श्री शौर्य डोवल और कर्नल पी.के.पंडा थे। अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए वनवासी बंधुओं ने कहा कि उनके क्षेत्र में ईसाई मिशनरी जनजातियों को मतांतरित करने का हर संभव प्रयास कर रही हैं।

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिल से आई २० वर्षीय अर्चना भार्गव ने जो बात बताई उसने निर्णायक मंडल सहित कार्यशाला में उपस्थित सभी लोगों को अंदर तक झकझोर दिया। अर्चना ने कहा कि 'मेरे पति को ईसाइयों ने मार दिया क्योंकि वे ईसाई नहीं बने।' अर्चना ने कहा कि हमारे गाँव परसापन में ईसाइयों के डर के कारण आज लगभग दो-तिहाई आबादी मतांतरित हो गई है। गुजरात के दाहोद जिले के बुंदिया ने बताया कि एक महिला प्रसव पीड़ा के कारण तड़प रही थी, वह बार-बार अस्पताल जाने के लिए कह रही थी। लेकिन वहां के ईसाई उसे अस्पताल न ले जाकर पास के चर्च ले गए, जहाँ चर्च के पादरी ने उसे एक शीशी में कुछ पदार्थ यह कहकर दिया कि इसमें यीशु का खून है इसे पीकर तुम्हें मुक्ति मिल जाएगी। इस तरह इलाज के अभाव में उस महिला की मृत्यु हो गई।

दो दिवसीय कार्यशाला के समापन के बाद सभी वनवासी बंधुओं ने जंतर-मंतर जाकर विरोध प्रदर्शन किया। वनवासियों ने मांग की कि ईसाई मिशनरियों से हमारी संस्कृति की रक्षा की जाए। इस अवसर पर मध्य प्रदेश के सांसद श्री ज्योति डरबे, छत्तीसगढ के श्री मुरारी लाल, गुजरात के श्री कानजीभाई पटेल तथा झारखंड के श्री सुरेन्द्र भगत भी उपस्थित थे। सांसदों ने वनवासियों को आश्वस्त करते हुए कहा कि वे इस मुद्दे को संसद तथा अन्य महत्त्वपूर्ण मंचों पर जोर-शोर से उठाएँगे।

सामाजिक समरसता अभियान प्रेरित
अनुसूचित जाति - अनुसूचित जनजाति
छात्रावास - प्रारंभ जून - २०१२
कर्णावती (अहमदाबाद) - गुजरात

कार्यकर्ता बंधु / भगिनी,

सादर प्रणाम

आगामी जून-२०१२ से अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति विद्यार्थी बंधुओं के लिए छात्रावास का शुभारंभ होने वाला है। अहमदाबाद शहर में ग्रामीय स्तर से उच्च अभ्यास के लिये जिन विद्यार्थी बंधुओ को प्रवेश मिला है ऐसे आर्थिक गरीब, जरूरियातमंद, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति समाज के विद्यार्थिओ के लिये सामाजिक समरसता अभियान गुजरात के द्वारा निःशुल्क आयोजन किया गया है।

छात्रावास प्रवेश के लिये कृपया जरूरियातमंद विद्यार्थी अपने सर्टिफिकेट और कॉलेज प्रवेशपत्रक लेकर निम्नलिखित पते पर संपर्क करे।

संचालक : श्री देवजीभाई जे. रावत

सामाजिक समरसता अभियान

धर्मादा होस्पिटल, गांधी आश्रम के पास, अहमदाबाद-३८००२७. गुज.

संपर्क : ०७९-२७५५९९८९ / ०९९२५२०३५३१

E-mail : samrastasetu2010@gmail.com

प्रति श्री,

नोंध : 'समरसता सेतु' मासिक में प्रकाशित लेख और व्यक्त किये गये विचार संबंधित लेखको के है। संपादक, तंत्री उसके साथ सहमत है ऐसा आवश्यक नही हैं। सभी कानूनी विवाद प्रकाशन के ३ माह में अहमदाबाद न्यायलय क्षेत्रमें किये जा सकते हैं।